रीती गठरी

वैधव्य के श्वेत परिधान में लिपटी कविता आज बरसों बाद एक यातना से उबरकर उस शांति का अनुभव कर रही थी. जिसे पाने के लिए वह दिन रात छटपटाती रही थी। बीस ....वर्षों की दुस्सःह लम्बी यात्रा। जिसमें चलते – गिरते. उठते– बैठते उसके कदम इस कदर भारी हो चले थे कि उसके पार्थिव शरीर का बोझ भी उठा पाने में अपने को असमर्थ पा रहे थे। वह उसी दहलीज पर बैठकर अपने अतीत के पन्ने पलटने लगी. जिस दहलीज की लक्ष्मण–रेखा को पार करते ही उसके सम्पूर्ण जीवन के सुनहरे स्वप्नों की आहुति दे दी गई थी।

....घर भर में खुशी की लहर दौड़ गई कि कविता के भाग्य में दूल्हा बहुत सुन्दरहै। उसका कद छैः फुट है. एवम् वह किसी भी व्यसन का आदी नहीं है। यह सब सुनकर मन ही मन कविता खिल उठी। उसकी कल्पनाएं उड़ान भरने लगीं।

शगुन की रस्में पूरी हुईं कि भीतर स्त्रियों में कुछ काना –फूसी सी हुई. "हाय– हाय" इतनी सुन्दर लड़की और यह..... ।तभी किसी के डॉटने व गुस्सा होने की आवाजें भी कानों में पड़ी। शादी– ब्याहों में ऐसा भी कुछ –कुछ होता रहता है. सो बात आई गई हो गई। पता करने पर मालूम हुआ कि दूल्हे की बहन और भाभी में किसी बात को लेकर तकरार हो गई थी। खैर... किसी ने खास ध्यान नहीं दिया। निश्चित समय पर विवाह निर्विघ्न सम्पन्न हो गया। दुल्हन रेशमी जोड़े में लिपटी विदा कर दी गई। दूल्हे की मॉ जीवित नहीं थी. अतःबड़ी बहन ही हर ओर प्रधान थी। वही सारे शगुन कर रही थी। अरमानों भरी रात . कमरे के बीचो बीच पलंग पर गठरी बनी बैठी कविता अपने नवजीवन के कर्णधार –अपने स्वामी के आने का बहुत बेसब्री से इंतजार कर रही थी कि अचानक धक्के से द्वार के पट खुले। उसका कोमल मन एकबारगी कॉप उठा। वे क्षण किसी आने वाले अनिष्ट का पूर्व संकेत से लगे। तरह –तरह की आशंकाएं उसके भीतर मंडराने लगीं। चेतनाशून्य सी वह नियति के अजीबोगरीब खेल का हिस्सा बन रही थी। ....उसे तो यही मालूम था कि महेश शराब नहीं पीते। फिर यह शराबी सी चाल...?कि तभी उद्वेग से भर कविता का पल्लू खींचने का यत्न करते हुए उसके सपनों का राजकुमार...उसका पल्लू हाथ में पकड़े हुए उसके सामने ही गिर पड़ा। वह थर्र—थर्र कॉप रहा था।

होनी का खेल....!अभागिन कविता बिना पल्लू के ही बाहर की ओर मदद के लिए भागी। घर मेहमानों से भरा था। पलक झपकते ही सब लोग वहॉ एकत्रित हो गए। कविता की जेठानी ननद पर चीख ही पड़ी 'मैं न कहती थी कि इतनी प्यारी लड़की का जीवन बर्बाद मत करो. आख़ीर वही हुआ ना. जिसका डर था।'...कि तभी ननद ने भाभी का मुॅह अपनी हथेली से दबोच कर बंद कर दिया। वो आगे नहीं बोल पाई। कविता के काटो तो खून नहीं। पल भर में सारी असलियत उसके सामने आ गई थी। उस ननद रूपी स्त्री के प्रति उसका मन वितृष्णा से भर उठा। सूखे तालाब की तलहटी जैसी उसकी ऑखों की पुतलियॉ दर्द भरे भय से निश्चेष्ट हो गईं और वह सहमकर भाभी के ऑचल में दुबक गई। जिस बेगाने घर को वह अपनाने आई थी. वहॉ केवल भाभी में उसे अपनापन लगा। डूबते को तिनके का सहारा।

डॉक्टर आया. महेश को दवाइयॉ दी गईं। नींद का इंजैक्शन देकर सुला दिया गया। रात सब की ऑखों में कटी। काना –फूसी भी हर ओर चल रही थी। जितने मुॅह उतनी बातें.........

रिवाज के अनुसार दुल्हन का भाई उसे मायके लिवाने के लिए दूसरे दिन सुबह ही आ पहुॅचा। विदा करते समय ननद रूपी स्त्री ने कविता से हाथ जोड़कर मिन्नत्तें कीं. कि वो रात की बात

 ©Veena Vij

को राज़ ही रहने दे।मायके में किसी को ना बताए।क्योंकि अब इस परिवार की इज्जत उसकी अपनी इज्जत है।इसका ध्यान उसीने रखना है।उधर कविता की सॉसें अटकीं थीं कि किसी तरह उसे इस घर से छुटकारा मिले तो इन पागलों का तो जीते जी कभी मुँह नहीं देखेगी।मन ही मन सब देवी देवताओं की पूजा अर्चना करती वो जब मॉ के घर पहुँची तो उसकी जान में जान आई।सामने ही मॉ को पाकर वो मॉ के गले लगकर खूब फूट –फूट कर रोई।वो भीतर ही भीतर भय से सर्द हो रही थी।एक ही रात में उसके यौवन के सारे स्वप्न टूटकर बिखर चुके थे।एक उदास सी हॅसी जो एक खाली जगह से उठकर दूसरी खाली जगह पर ख़त्म हो जाती है. . .और बीच की जगह को भी खाली छोड़ जाती है –उसके चेहरे पर घर कर गई थी।उसने भीतर से अपना कमरा बंद कर लिया।अपनी घायल आत्मा का बोझ उठाए वह धरती पर निःस्पंद पड़ गई।बाहर सब पुकार रहे थे व हैरान परेशान थे।कोई नहीं जानता था कि बात क्या है।मॉ ने लाख दुहाई दी तो कविता ने द्वार खोला।उसकी हालत देखकर तो मॉ तड़प उठी।कविता ने कहा कि वह ससुराल नहीं जाएगी. महेश को पागलपन के दौरे पड़ते हैं।उसने सारा किस्सा सुनाया व कहा कि अभी कुछ नहीं बिगड़ा है।अभी उसने उसे छुआ तक नहीं है।लेकिन . . .हमारा मध्यवर्गीय समाज और इसकी मजबूरियॉ।जिस विश्वास और भरोसे की मजबूत रस्सी को थामकर अपने जीवन की डगमग नैय्या को कविता किनारे पहुँचाने लगी थी. उसने तो उसे मॅझदार में ही डूबने को छोड़ दिया।इक तिनके का सहारा भी उसे नहीं मिला।पिताजी ने सहारा देने के बदले .उसके सामने अपनी दो और जवान बेटियों की मजबूरी जताई।कविता अवसन्न सी कभी मॉ तो कभी पिताजी का चेहरा तक रही थी।अथाह पीड़ा से उसका चेहरा पीला व ज़र्द हो गया था।घर में कोई भी न था.जो इस दुख की घड़ी में उसका साथ देता।मध्यवर्गीय परिवारों में इसी प्रकार अपनी आर्थिक या सामाजिक मजबूरियॉ जताकर बेटियों को बलि का बकरा बना दिया जाता है।चौथे ही दिन कविता के तथाकथित पति व जेठ उसे लिवाने आ गए।रोती– बिलखती. ज़मीन पर लोटती कविता की एक न चली।मॉ ने भी पति परमेश्वर का इशारा समझकर सीने पर पत्थर रख लिया।छोड़ दिया कविता की जीवन की नैय्या को भाग्य के भरोसे...डूबने या कभी किनारा पाने की आस में।पागल महेश के पल्ले मढ़कर उसे भेज दिया गया ससुराल।दिखने को वह निर्विकार .बुझा सा चेहरा था।लेकिन वह चुप्पी का रोना था।अलग–अलग सॉसों के बीच बिंधा हुआ।हर सॉस में अभी भी पिताजी की मजबूरियॉ संग सॉस ले रही थीं।

दिखने में तो महेश असाधारण व्यक्तित्व का मालिक था।डॉक्टर्स ने बताया कि अति प्रसन्नता या असीम दुख की स्थिती में उसके दिमाग का संतुलन बिगड़ जाएगा।ऐसे में महेश खाना खाने बैठता तो बीस – बीस रोटियॉ खा जाता।नहाने जाता तो चार घंटे नहाता ही रहता।कई बार बाहर आने पर वह बुखार से तप रहा होता।कभी अपने कपड़े निकालने लगता तो सारी अल्मारी ही खाली कर देता।जब कभी वह साधारण स्थिती में होता .तो कविता को उस पर तरस भी आता।एकाध बार उसने महेश से पूछने का यत्न किया.तो महेश ने बिना सोचे –समझे उसे मार –मार कर अधमरा कर दिया।

शादी की पहली साल–गिरह पर कविता ने एक नन्हे–मुन्ने बालक को जन्म दिया।जिस पुरूष से नाता जोड़ने में उसे कष्ट था.वही उसके पुत्र का पिता बन चुका था। अभी तक जीवन को वह टूटे हुए टुकड़ों में जी रही थी। आज पहली बार कविता को अपने सम्पूर्ण होने का आभास हुआ।उसकी ऑखों में एक भीगी हुई चमक थी जो खुशी के ऑसुओं के बाद चली आती है।महेश भी खुशी से फूला नहीं समा रहा था .कि यही खुशी उसे ले डूबी।पुत्रजन्म की खुशी की अधिकता

 ©Veena Vij

से उसका मानसिक संतुलन बुरी तरह असंयत हो गया। डॉक्टर्स ने महेश को पागलखाने भेज दिया। पल भर में सब कुछ छिन्न –भिन्न हो गया। नवजात शिशु को आँचल में लपेटे कविता फिर से जीवन के दोराहे पर आ खड़ी हुई थी। उसकी ननद, जेठ– जेठानी व अन्य सभी अपने –अपने घर में मस्त थे। काफी सोच–समझकर कविता ने अपने शिशु को माँ की गोद में डाल दिया। स्वयं जे.बी.टी. करने लग गई। ट्रेनिंग ख़तम होने पर उसे टीचर की नौकरी मिल गई। साथ ही रहने को सरकारी क्वार्टर। आत्मविश्वास से भरी कविता अपने नए जीवन में दृढ़–संकल्प हो कर्त्तव्य करने की प्रेरणा लेकर बढ़ चली।

समय –समय पर वो महेश को देखने पागलखाने भी जाती रहती। साथ में उसके लिए कपड़े, खाने का सामान व दवाइयाँ भी ले जाती। वो साधारण मनःस्थिती रहने पर पुत्र का हाल भी पूछता। कविता देखती उसका ईलाज ठीक चल रहा है न। वक्त ने तो हर हाल में चलते ही जाना है, सो इसी तरह आठ साल बीत गए। इस बार कविता को बुलावा आया कि महेश अब ठीक है... आकर ले जाएं। कविता प्रफुल्लित मन से पिता और पुत्र के मिलाप के हर्षित क्षणों की कल्पना करती महेश को लेकर मायके पहुँची। पिता से पुत्र नवीन का परिचय हुआ। नवीन के चेहरे पर पिता के लिए एक प्रश्नचिन्ह, जो सदा से था– आज उसे अपना उत्तर मिल गया था। नवीन अपने पिता से लाड़ करता व बतियाता फूला न समाता। महेश को भी मानो जीवन की अमूल्य निधी मिल गई थी। पुत्र का सान्निध्य पिता के लिए अभिशाप बन सकता है, यह किसी ने न सोचा। इस बार की खुशी से महेश इतना असंयत हुआ कि इस बार उसका मानसिक संतुलन जो बिगड़ा, तो उम्र भर वो उससे बाहर नहीं निकल पाया। सब कोशिशें बेकार चली गईं। पागलखाने में उससे मिलने की भी मनाही कर दी गई। मिलने आता भी कौन था। भाग्य के हाथों लुटी कविता या फिर कभी कभार उसका भाई। पिता तो कविता के हालात का दोषी स्वयं को मानकर कब से दुनिया से चलता कर गए थे। इस बार कविता पुत्र को साथ ही ले गई। जब वह पढ़ाकर वापिस आती तो नवीन को घर की सीढ़ी पर बैठे होम– वर्क करते पाती। बच्चे एक सीमा के बाद, बड़ों की मजबूरी सूँघ लेते हैं। उसने नवीन को कभी कुछ नहीं बताया। पापा को दौरा पड़ा देखकर वह ऐसा सहमा कि कभी भी माँ से कुछ पूछ नहीं पाया।

आज... आज महेश की मौत की ख़बर आने पर कविता छुट्टी लेकर चुपचाप अकेली ही वहाँ गई। अस्पताल के स्टॉफ के साथ जाकर उसका दाह– संस्कार करके वह सीधी मायके की बस पकड़कर माँ के घर पहुँची। उसे इस रूप में देखकर माँ, बहनें व भैया, भाभी हतप्रभ से रह गए। प्रश्नों की बौछार चारों ओर से उस पर गिर रही थी। किन्तु वह पत्थर की शिला बनी बैठी थी। उसके भीतर के सन्नाटे में उसकी रूधी साँसें थीं। आज पुनः वहाँ चप्पी के रोने का शोर था, जहाँ बाहर का शोर सुनाई नहीं देता था। वह निर्विकार माँ की उसी दहलीज पर बैठी अपने सम्पूर्ण जीवन के सुनहरे वर्षों की जलती आग की ठंडी पड़ी राख पर रीती गठरी बनी न हँसी न रोई।

वीणा विज 'उदित'

©Veena Vij